03 THURSDAY
APRIL

5

अब मैं समझता हूँ कि यहाँ [illegible] [illegible] इस पद में ज्ञान योग के खण्डन के लिए प्रेम योग की प्रतिष्ठा की गयी है। ज्ञान योग की जितनी क्रियायें हैं उतनी क्रियाओं की चर्चा इसमें की गयी है और बताया गया है कि वह सब प्रेमयोग में सम्भव है। चित्तवृत्तिनिरोध से लेकर ध्यानयोग तक की क्रियाओं और उसके बाद की अवस्था की भी तुलना इसमें की गयी है। इस प्रकार हम देखते हैं कि महाकवि सूरदास ने इस पद के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिष्कृत रूप प्रस्तुत किया है।

कुमार रजनीकान्त रंजन